वेदों की खुशबू

ओ३म्
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 75	Year 7	Volume 11	December 2018 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6

ईश्वर ने जो भी दिया है उसका प्रयोग करें व बढायें

एक सफल धनी व्यापारी के पास तीन व्यक्ति काम करते थे। उसका अपना एक ही बेटा था जो कि अमेरिका में बस गया था । जब वह बूढ़ा हो गया तो उसकी भी अपने बेटे के पास ही रहने की ईच्छा हुई, क्योंकि बेटा भारत आने के लिये तैयार नहीं था। फिर विचार आया कि क्या पता वहां दिल न लगे। उसने अपने काम को कुछ समय के लिये बन्द करने का निश्चय किया और अपने तीनों कर्मचारियों को अपने दिल की बात बताई और साथ में ही तीनों को दस–दस लाख रूप्ये देकर कहा कि मैं नहीं चाहता मेरे इस निर्णय से आप तीनों को कोई मुश्किल हो। आपने जीवन भर मेरे साथ काम किया है , अब आप तीनों इस पैसे का प्रयोग जैसा उचित समझतें हैं, कर लें।

उस व्यापारी का अमेरिका में बेटे और उस के परिवार के साथ दिल लग गया। दो साल बाद

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
 # 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा
15- हनुमान रोड
नई - दिल्ली - 110001

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

उसने सोचा कि उसे भारत जा कर अपने व्यापार को किसी उचित व्यक्ति के सपुर्द कर देना चाहिये। भारत पहुंच कर उसने अपने तीनो कर्मचारियों को बुलाया जिन्हें उसने दस–दस लाख रूपये, जाने से पहले दिये थे, वह देखना चाहता था कि उन्होने उस पैसे का क्या किया।

पहले नें व्यापार स्थापित किया था और बहुत उन्नती कर ली थी। बंगला, कार व उसके रहने का ढंग सब बता रहा था। उस के पास कई व्यक्ति काम कर रहे थे। व्यापारी को यह देख कर बहुत खुशी हुई। दूसरे ने किसी के पास फिर से नौकरी कर ली थी व उसकी हालत ठीक ठाक थी। तीसरे की हालत कुछ पतली थी। व्यापारी ने उस से पूछा कि उसने उस पैसे का क्या किया? उसने बताया कि उसने दस लाख रूपये बैंक में फिक्स्ड डिपोसिट में डाल दिये और ब्याज की कमाई पर जीवन यापन कर रहा है। व्यापारी एक महीने के करीब भारत में रहा और जाने से पहले फिर उन तीनों को बुलाया, एक साथ चाय पी और फिर घोषणा की ——मैं अपना सारा व्यापार पहले कर्मचारी के नाम कर रहा हूं, उसी में मैने यह योगयता देखी कि वह मेरे पैसे का उचित प्रयोग करता हुआ इसे बढ़ाये और समाज व देश के प्रति कर्तव्य पूरा करें। ईश्वर ने जो भी हमें दिया है वह प्रयोग करते हुये बढानें के लिये दिया है, न कि हम असुरक्षा की भावना में कर्महीन हो जायें। नौकरी करने वाले से वह कहीं उपर है जो कि कार्य करता हुआ दूसरों को भी काम देता है। इसी में समाज और देश का भला है। वेद में भी कहा है

अग्निना रयिमश्नवत पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्वमम।

ऐ मानव ! तू खूब धन कमा, परन्तु तेरा धन आत्मा और शरीर की पुष्टी करने वाला, उत्तम कीर्ति को बढाने वाला व ऐसा धन हो जिसे विद्धान व शूरवीर भी चाहते हैं।

यह बात केवल धन पर ही लागू नहीं होती, जो भी ईश्वर ने आपको दिया है———जैसे खास कार्य कुशलता जिये हम skill कहते है, उसे लोगों को बतायें, ताकी वे भी अपनी जीविका अर्जित कर सके। जो भी आप हाई वे पर बड़े बड़े होटल ढाबे देखते हैं उन में अधिक एक समय किसी छोटे ढाबे में काम करते थे। देश के सब से बड़े होटलियर ओबराये किसी समय एक होटल में कर्लक ही थे। जब हम काम करते जाते हैं रास्ते भी बनते जाते है। जरूरत है कि हम असुरक्षा की भावना से धन और कला को छुपा कर न रख लें बल्कि उसका प्रयोग उसे बढाने के लिये करें।

यदि आपके पास धन और skill दोनो ही नही तब भी आप के पास एक बहुमूल्य सम्पदा है और वह है ——प्यार दूसरों को देना व बांटना। प्यार बांटने से बढता है, कम नहीं होता। जितना प्यार आप लोगों को बांटेगे, उससे कहीं अधिक आपके पास लौट कर वापस आना शुरू हो जायेगा है कोई ऐसी चीज जो कि दूसरों को बांटने से बढ़ती हो, फिर भी प्यार ही ऐसी चीज है जिसे बांटने से मनुष्य परहेज करता है, और उसकी हृादिक इच्छा यही रहती है कि हर ऐक उसी को प्यार करें। ऐसी भावना तो प्यार को खत्म कर देती है।

इसलिये, ईश्वर ने जो भी दिया है उसका प्रयोग करें व बढायें

मनसः कामकाकृति, वाचः सत्यमषीह

यर्जुवेद की इस सुक्ति में मानव ईश्वर से प्रार्थना करता है— मैं एक उत्कृष्ठ मानव बनूं। मेरे अन्दर प्रवल इच्छा शक्ति और संकल्प शक्ति दोनों हों। इच्छा शक्ति इस लिये ताकि मैं जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रयत्न करूं। विद्वान कहते हैं इच्छा शक्ति को बलवान बनाने पर ही मनुष्य जो इच्छा करता है पूर्ण होकर रहती है। और संकन्प शक्ति इस लिये ताकि मैं अपने व्रत से डांवाडोल न हो जाउं। विद्वान कहते हैं—जिनमें संकल्प शक्ति नहीं होती, वे नित्य नये–नये संकल्प करते हैं और किसी न किसी बहाने उनको तोड़ते रहते है।

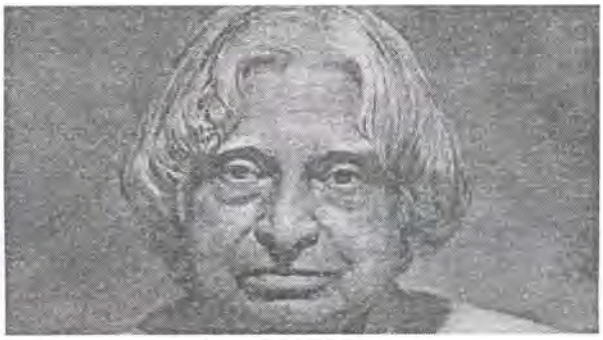

आज तक जिन महान मनुष्यों ने किसी भी क्षेत्र में नाम कमाया है वे दोनो शक्तियो को अपने आप में पैदा कर ही असाधारण कार्यो को कर सके, और तभी वे उत्कृष्ठ मानव कहलाये। इसलिये जब भी आप किसी बड़े कार्य में लगें हैं तो अपनी इच्छा शक्ति और संकल्प शक्ति को कमजोर न होने दें।

दूसरे भाग में प्रार्थना की गई है कि मेरी वाणी में सत्य हो। वाणी में सत्य तभी आ सकता है यदि मन सत्य बोलने के लिये कटिबध हो। सत्य बोलने के लिये भी साहस और संकल्प दोनो चाहिये। जब हम सत्य बोलने के लिये कटिबध होते है, तो सत्य कर्म में भी आ जाता है। इस प्रकार मनसा, वाचा और कर्म में सत्यमय हो जाउं, यह मेरी अभिलाषा और प्रार्थना है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

PURPOSE OF LIFE

Prof. (Dr) S.P. Puri

Reincarnation teaches that life continues after the so-called death. The physical body does not last but the soul lasts forever being the image of Spirit - the permanent soul in a temporary body. We are reincarnated many times and given these chances repeatedly to clear the back log of our accumulated actions and grow spiritually till the soul reaches perfection and attain salvation from the cycle of birth and death.

"Life is a combination of destiny and free will. Rain is destiny, whether to get wet or not is free will."

SRI SRI RAVI SHANKAR

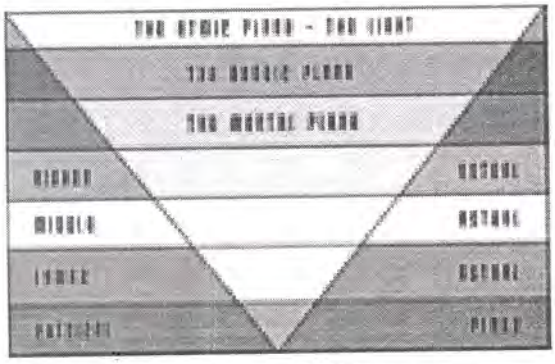

The Astral Planes

One can develop spiritually only through spiritual practice which conforms to the six basic principles[5]. These are:

1. **There are as many paths to God as there are people** We all are unique and what works for one person may not work for another.These are the paths of work, knowledge, worship, bhakti and any of these can be adopted.
2. **Go from many to one**
   Just as a scientific researcher focuses on one problem for unraveling its solution, so is
   The case in our spiritual journey,wehave to focus our efforts for attaining higher spirituallevel.
3. **Progressing from gross to subtle**
   When we are imbued with our love for God, we will resonate with the same feeling towards His creation.
4. **According to our spiritual level**
   We should undertake spiritual practice according to our spiritual capacity and maturity.
5. **Doing spiritual practice relevant to the times**
   Doing right thing at the right time should be our motto.
6. **Offering to God as per our talent or capacity**
   God has bestowed talents and material resources on usand these are to be offered to Him to serve His mission, through our caring of others. Making a difference in the lives of others is the highest service of the creator.

Worldly Perspective

Each soul is potentially divine, and the goal is to manifest that divinity by exercising control over our nature - external as well as internal. This can be done either by work, or worship, or psychic control, or philosophy--by one or more or all of these and eventually be free.

From the worldly perspective, all of us have our

own goals and ambitions. These may involve becoming a teacher, a doctor, an engineer and a scientist or a business man aspiring to be wealthy and renowned. One may aspire to join the armed forces or becomean athlete for bringing honour to the country.The aim in life varies among individuals. An artist may aim to paint masterpieces that will live long after he is gone. A scientist may want to discover some laws, formulate a new theory, or invent a new machine. A politician may wish to become a prime minister or a president. A young executive may aim to be managing director of a multinational company. However, when you ask the artist, scientist, politician and the young executive why dothey have such anaim, they will reply that these achievements will give them a purpose in life and make them happy. Everyone aims for happiness in life, yet experience shows time and again that its attainment is so elusive. Whatever the goal, it is essentially a worldly one. Our education system is geared to impart us skills that will assist us to sustain ourselves financially and discharge our family obligations of raising our children and helping them to become respectable citizens. The success in the worldly affairs is essential to build self-confidence and dignity.

Furthermore, the worldly activities are not at variance with our spiritual development. We pursue these simultaneously according to our potential and capacity. Depending upon our resources, we can always extend help to the less privileged and needy persons, both financially and time-wise. In any society, there are ample opportunities for helping others who are less fortunate. Blind pursuit of worldly achievement drugs our senses and makes us insensitive towards others. When we have generated enough resources for our needs in the rest of our lives,itis opportune time to direct our energies in serving others. There are many social organizations that one can join on part-time basis to do voluntary service and thereby advance spiritually, since caring for others is the highest virtue. There is no dearth of such opportunities for anyone to avail of.

Man has conquered time and space and made available umpteen physical comforts through the development of technology. But all these conveniences are for the physical body and in no way a source of satisfaction to the soul. Technology is a good servant but a bad master. Let us not become subservient to the technological gadgets in our life and forget the uplifting actions of extending help to another needy person.

Caring for others, without any desire for reward or appreciation, is indeed the noblest action. We are beholden to the society for all the comforts and facilities and should never forget that we must repay this debt to the best of efforts and resources. There is no dignity in living as a fungus and parasite in the society. Our debt of gratitude must be paid back by doing our little bit for uplifting those who are under privileged.

GURU NANAK DEV ON WOMEN

So kyon manda aathiai jit jame rajan?
(Why disrespect those who give birth to kings?).
That is the first step towards a progressive and egalitarian society.

चिन्तामुक्त जीने का तारीका

1 बीती जो जा चुकी उस की फिकर मत कर बाकी जो रह गई उस को सुधार ले।।

उपनिषद कहती हैं हिम्मती लोग वही हैं जो वर्तमान में जीते हैं और कायर वे हें जो भविष्य की चिन्ता के कारण हमेशा दुखी रहते हैं। बहुत से लोग जीवन का आनन्द इसलिए नहीं उठा पाते, क्योकिं वे हमेशा भविष्य की चिंता करते रहते हैं। यह उसी तरह है जैसे कि अगर हम अपनी छाया को पकड़ने की कोशिश करते हैं तो आगे बढ़ने पर छाया भी आगे बड़ जाती है। इस प्रकार हमारा सम्पूर्णजीवन व्यर्थ का संघर्ष बन कर रह जाता हैं।

वर्तमान का आनन्द हम उठाते नहीं है व भविष्य की चिन्ता से अपने आप को घेरे रखते हैं।

2 जो कार्य आप को सब से मुश्किल लगता है उसे सब से पहले करें। अक्सर हम मुश्किल कार्य को टालते रहते है, परन्तु ऐसा करने से वह हमारी चिन्ता का कारण बना रहता है, इसलिये जो मुश्किल लगता है उसे सब से पहले करें।

3 हर समस्या के कई रास्ते हैं, उस रास्ते को भूल जाइये जो आप के लिये बन्द है। अक्सर हम उसी रास्ते के बारे में सोचते रहते हैं जो हमारे लिंये बन्द होता है। न ही उस रास्ते को अखतियार करें जो आपके मन की शान्ति को भंग कर दे। जिस के लिये आपकी आत्मा ही आपको रोक रही है, उस तरफ बढ़ने की सोचें ही न।

4 जब आप क्रोद्धित हो जाते हैं, तो आपका रास्ता और कठिनाई भरा हो जाता है व कार्य को पूरा करने के लिये जो शक्ति चाहिये उसे नष्ट कर बैठते हैं। इसलिये क्रोद्धित होने से बचें। यदि क्रोद्धित हैं, तो रूक जाईये, जब क्रोद्ध शांत हो जाये , तब समस्या का हल ढूंडे। एक घटना से मिलता है। एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक जंगल से गुजर रहे थे। उन्हे प्यास लगी तो उन्होने अपने एक शिष्य को पास के एक तालाब से पानी लाने को कहा। कुछ देर बाद शिष्य खाली वापिस आ गया व बोला तालाब का पानी मिटटी वाला है। महात्मा बुद्ध ने उसे कुछ देर ठहर कर जाने को कहा। इस बार पानी साफ था।। महात्मा बुद्ध ने समझाया कि पिछली बार जब तुम गये थे, तो एक बैलगाड़ी यहां से गुजरी थी स्वभाविक है कि तालाब के उपर से गुजरने के बाद सारा पानी हिल गया पर कुछ देर बाद मिटटी बैठ गई व उपर का पानी साफ हो गया। इसी तरह दैनिक जीवन में कोई बात आपको क्रोद्धित कर देती है तो एकदम प्रतिक्रिया (react) न करें। थोड़ी देर के लिये रूक जायें अपने आपको किसी और कार्य मे लगा दें।

5 हर हालत में अपना ख़र्चा, कमाई से कम रखें। यह बिल्कुल सम्भव है। इच्छाऐं और शौक हर व्यक्ति में होना स्वभाविक है। परन्तु देखना यह है कि हमारे पास उन को पूरा करने के लिये प्रयाप्त साधन हैं, अगर नहीं हैं तो अपने उपर नियन्त्रण ही ठीक है। हां साधन बढ़ाने के लिये आप प्रयत्न शुरू कर दें, और जब हो जातें हैं तो इच्छाऐं और शौक भी पूरा कर लें। परन्तु इस के लिये कर्जा लेना और गलत साधन अपनाना आपकी चिन्ता को बड़ा सकता है।

6 जो हमें मिला है उसके लिये धन्यवादी रहे। शिकायत व अपेक्षा का रूख न अपनायें। इस से सु

से अधिक नुकसान आप अपना ही करते है।

7 सत्य से बढ़कर कोई और चीज मन को शान्ति नहीं देती, झूठ मन की शान्ति को खत्म कर देता है। इसलिए सत्य का ही आचरण करें। न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्। न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें। जब आप एक झूठ बोलते हैं तो उसे बचाने के लिये कई और झूठ बोलने पढ़ते है। और यही हमारी चिंताओं में घी का काम करता है।

8 मोह से दूर रहें। आज हमारे मध्य आय वर्ग के चिन्ताओं से भरे जीवन का मुख्य कारण बच्चों के प्रति मोह है। कर्तव्य, प्यार व मोह तीनों में बहुत बड़ा फर्क है। बच्चें को शिक्षित करना माता पिता का कर्तव्य है, वह भी एक सीमा तक । यदि वह उसके योग्य ही नहीं और उसका मन है ही नही तो शिक्षा पर पैसा करना भी नाली में फैंकने के सामान है। परन्तु अपने आप को मुश्किलों में डाल कर उस के जीवन भर के सुखों का इन्तज़ाम करते रहना, चिन्ताओं को न्योता देना है।

Drona Award should be re-named as 'Ramakant Achrekar Award'

Drona award is given by Government to the outstanding coach from any of the discipline in Sports. It is named after Pandava's guru, Dronacharya of Mahabharta epic because he trained an archery exper like Arjuna. But according to me, to name it after Dronacharya is a big disgrace on the country, if one goes by the life history of Dronacharya..

I am just dwelling on one of the incidents of Drona's life. When Eklavya, a low caste approached him to learn Dhanurvidya, art of archery, he was refused on caste grounds. But what is still more abominable that after having come to know that Eklavya with self training had attained the level where he could even overshadow his favorite disciple Arjuna, he asked Eklavaya to presents the thumb of his right hand, as Guru Dakshina.

Any sensible society would have condemned Drona's action in its severest terms but unfortunately in India , we have named a National award in his name. It will be the right thing to re-name it as Ramakant Achrekar Award. I am not suggesting this as a cricket buff or because Late Ramakant Achrekar was the guru of Sachin Tendulkar. Recently when Ramakant Achrekar died, I had a chance to read few things from his life as a coach. What touched me most that he would go out of his way to help bright disciples, from marginalized families, irrespective of their caste or background? Ex Indian cricketer Vinod Kambli is the example. He would pay his school fee even, from his meager resources and to ensure that he had not to spend on bus fare, would take him on his two wheeler. There is no secret that Kambli was from low caste.

आर्य मान्यताओं के पुनः संस्थापक – महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

कृष्णचन्द्र गर्ग

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया।

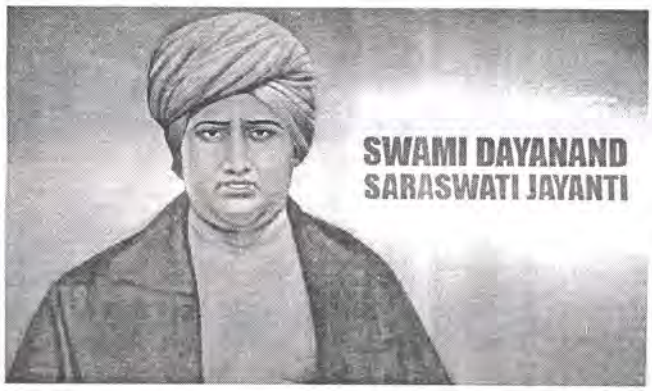

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबलों को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना न मानते थे। वे लिखते हैं "जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपौड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।"

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्ठों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और आर्यत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति–प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह का का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियां जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएं वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने

दिया – सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य–असत्य को जानने वाला है। परन्तु श्लोक उद्धृत किया है –

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद का निम्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के उपर शायद यह सब से अच्छा लेख मैने पढ़ा है। मेरा अनुरोद्ध है कि कम से कम आर्य समाजों में इसे पढ़ा जाये। परिवार में अपने बच्चों को इसे पढ़ने को दें, ताकी हमारी आने वाली पीढ़ियां जाने, कि हम हिन्दुओं के सुधार के लिये, हमे ठीक रास्ते पर डालने के लिये, इस देश को बचाने के लिये, महर्षि दयानन्द सरस्वती कितना महान कार्य कर गये। आज सब से दुख कि बात तो यह है कि हम जो अपने आप को आर्य समाजी कहते हैं, हमारी अगली पीढ़ी अर्थात बच्चे ही इस महान सन्त के बारे में नहीं जानते है, दूसरे तो क्या जानेंगे, इस सब के जिम्मेवार हम खुद है, क्योंकि हम चाहते ही नहीं कि हमारे बच्चे इस के लिये समय खर्चें।

किसी गुरूकुल के प्रोफैशलन वक्ता को 10 हजार खर्च कर 45 मिन्ट के लिये बुलाने से कहीं अच्छा है आप स्वयं यह काम अपने हाथ में ले, आप ने भी तो इतने सालों में बहुत कुछ जाना और सीखा है और बच्चों को आगे लाये। इन ४५ मिन्टों में भी ५ मिन्ट वह आपका विद्वान वक्ता प्रवन्धकों के धन्यवाद अर्थात चमचागिरी में और भूमिका बनाने में लगा देता है और 5 मिन्ट प्रवन्धक उसको हार पहनाने और धन्यावाद करने में लगा देते है। बाकी आधा घन्टा वह कोई मन्त्र बोलकर अर्थ करने में लगा देगा। कारण वह संस्कुत का अध्यापक होता है और यही काम वह जानता है और करता है, मुख्य विषय वहीं रह जाता हैं। यही आप जब बच्चो को मौका देते है जो वह 10 मिन्ट में सारी बात कह जाते हैं। विषय पर केन्द्रित रहते हैं , और सब लोग उसे ध्यान से सुनते है क्योंकि बच्चें के मुंह से सुनने का आन्नद ही और होता है।। सब से बड़ी बात कुछ और बच्चे भी उस से प्रेरणा लेतें है। और हमारे बच्चे भी आर्य समाज और दयानन्द के बारे में जानने लगेगे। अच्छा हो हमारे प्रवन्धक अपनी मानसिकता को बदलें। बच्चों को और नवयुवकों को आगे लायेगें तभी आर्य समाज और स्वामी दयानन्द की विचारधारा जीवित रहेगी वरना यह विशाल भवन ही रह जायेगें जिनके प्रवधंक भी आर्य समाजी नहीं होंगे, बहुत से आर्य समाजों का तो यह हाल हो चुका है।।

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिन्हों को धर्म से न जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है – 'न लिंगम् धर्म कारणं' अर्थात बाहरी चिन्हों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा है – आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है।

स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं "देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़–पढ़ा, सुन–सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।"

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य–असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रुद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन 1873 में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं।

स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य–सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे "मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियां निकलवाना है, ईंट–पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना–फोड़ना नहीं है।

सन 1874 में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की बहुत प्रशंसा किया करते थे। इसी कारण से बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। 1874 में नासिक में स्वामी जी ने यह भीं कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

सन 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया – मूर्तिपूजा पर मृदु

आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

सन 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सांयकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।

वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं "मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।" महर्षि का यह मत सभी ऋषि–मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं – बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे। अर्थात वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं – यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्मं वेद नेतरः। अर्थात जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं।

महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वर कृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री–पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। "भ्रन्ति निवारण" पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं – "मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।"

अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में – 23 नवम्बर 1880 को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्यचार से कुछ–कुछ छुटकारा मिला है। "मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पारलियामैंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।"

सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध

देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए. के विचार – "इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।"

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी – "हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।"

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था – हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।

महान कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा हैं कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। "मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएं अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

गृहस्थ पालन सब से बड़ा धर्म है

स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने प्रवचनों में ईमानदारी से अर्जित अपनी आय का कुछ अंश सेवा परोपकार आदि कार्यो में खर्च करने की प्रेरणा दिया करते थे।

एक बार वैदिक धर्म का प्रचार करते हुये वह एक नगर में पहुंचे। श्रोता उनके प्रवचनों से बहुत प्रभावी थे। कुछ दिन बाद एक श्रोता उनके पास पहुंचा और प्रणाम करने के बाद कहने लगा———महाराज आपके प्रवचनों ने तो मेरी आंखे खोल दी। मैने अपनी पूरी जवानी घर गुहस्थी के पचड़े में व्यर्थ गवा दी। अब मैं संसारिक बंधनों से मुक्ति पाने के लिये अपनी दुकान बेचकर, वह धन आर्य समाज के कार्यो के लिये समर्पित करना चाहता हूं।

स्वामी जी ने उस की बात सुन कर कहा———आपके परिवार में कौन कौन है?

उस व्यक्ति ने बताया——उस कि पत्नी और बच्चे।

स्वामी जी ने उस को समझाते हुये कहा, वैदिक धर्म में गृहस्थी के पालन का उतना ही महत्व है जितना कि दूसारे किसी आश्रम का, बल्कि यह सब से उंचा है, क्योंकि गृहस्थ आश्रम में रहते हुये ही व्यक्ति, माता–पिता, पत्नी, बच्चे और घर में रह रहे दूसरे बढ़ों के प्रति कर्तव्य पालन का अवसर प्राप्त करता है। अब यदि आवेश में आकर , दुकान बेच डालोगे तो यह सब कर्तव्य और धर्म कैसे पूरा करोगे। ठीक ढंग यह है कि गुहस्थी में रहते हुये ईमानदारी से अर्जित अपनी आय का कुछ अंश सेवा परोपकार आदि कार्यो में खर्च करें। यही धर्म है।

831 सैक्टर 10,
पंचकूला, हरियाणा
0172–4010679

Difference between being religious and appearing religious

Bhartendu Sood

Whenever anyone asks me about being religious the first thing I inquire of him is, "Do you want to appear religious or to become religious?" The two are different dimensions. Being religious involves a self- **discipline for Self-realisation**; making strides to embrace what I listened and found to be right; appearing religious is just **self-adornment**.

The stereotyped garbs of hermits and monks, marks on their foreheads and bodies, and other paraphernalia – all these are for appearing religious; it is very easy and amounts to deceiving others..

Like religious clothes and religious signs, religious qualities can also be worn. People wear them like ornaments of decoration. And this deception is even deeper. When we have a fever and the body is running a temperature, we don't try to get rid of the fever by bringing down the temperature. We try to reduce the fever and this brings the temperature down. Temperature is only a symptom of the fever, not a disease in itself; only an indication, not an enemy. What would you call those who begin to battle with temperature itself?

This same kind of nonsense goes on concerning religious life, moral life. Outward indications are mistaken for the enemy, the symptoms are taken for the disease, and we begin to fight with them. This does not help to eliminate the disease; on the contrary it is the patient who will surely be eliminated.

Ego, untruth, violence, lust, anger, greed, infatuation are all indications, symptoms. They are the temperature, not the disease. They are not to be fought against directly; through them we need only to know there is an enemy within. **Ignorance of the Self is this enemy**. This ignorance is expressed in a variety of ways, like ego, untruth, violence, lust, fear and anger. Hence, destroying these cannot destroy the ignorance of Self, because that is the root and these are merely its expressions.

Anyway, these symptoms cannot be destroyed directly. At the most you end up putting plastic flowers of truth over untruth, of nonviolence over violence and of fearlessness over fear. You may have decorated yourselves with such flowers, and

they may have deceived others, but I hope you are not deceived by them yourself.

The question is not that of getting rid of untruth, violence and fear, but of getting rid of ignorance of Self. That alone is the problem. They are all there because of this ignorance. Without it they have no existence. If there is no ignorance of the Self, all these disappear automatically and in their place arise truth, non-ego, desirelessness, non-anger, nonviolence, non-possessiveness. They, too, are symptoms. They are the symptoms of Self-realisation.

Solution is self –realisation: This is possible only when we spend time to know ourselves, purpose of our coming on this planet, next birth and the creator who sent us on this planet. Hence, always listening to one Guru or the other, spending hours before the spiritual channels on TV can not serve the purpose of realisation. To me this is a religious entertainment, which is not bad if you enjoy it. I have seen people who become addict of listening same thing time and again. Our Arya Samaj is one example of it. I have a friend, who can be seen listening to same Acharya, in different Arya Samajs but I doubt that he spends time to think what was new in what he said and what I am doing to embrace what he had already said. Draw a balance between listening and thinking, between listening and telling others, only then you are fulfilling your duty as an Arya Samaji------ to dispel ignorance is the duty of every Arya Samaji.

I give you one more example, Nanak the poet wrote against institutional religion, criticising dogmatic rituals, but today the religion he founded eventually became one of the most prominent institutionalised religions of the world.

While undertaking pilgrimages to different religious shrines, he spoke about their futility; his gurdwaras today have become major pilgrimages. Likewise, in our Arya Samaj, which was once considered to be the organization of enlightened, it is not difficult to wear the garb of religious. Learn Sanskrit for a year or six months, especially chanting mantra, even if you do not know their meaning, it hardly matters, you can be in the business of fooling masses and making easy money for whole of your life. Indeed all of us need to draw a balance between listening and thinking, this is not to undermine the importance of former.

******

1. *पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।*

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

2. *विज्ञापन से सम्पादक के विचारों का मिलना, आवश्यक नहीं सम्पादक उस की किसी भी प्रकार जिम्मेवारी नही लेता।*

गृहस्थ में रहते हुये ही त्रिएषणयों से छूटने का अभ्यास करें

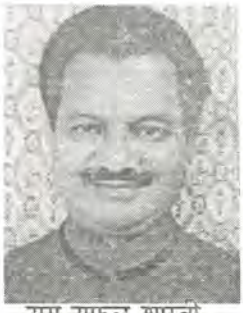

राम सुफल शास्त्री
पुरोहित आर्य समाज सैक्टर 7, चण्डीगढ

वेदों के अनुसार संसार की समस्त योनियों में मनुष्य योनी सर्वश्रेष्ठ है। इस मनुष्य योनी में ही जन्म मरण के चक्र से छूटकर अपना जीवन सफल करने का मनुष्य को अवसर मिलता है। मनुष्य को यह समझ लेना चाहिये कि मनुष्य योनी पिछले जन्म के पुण्य कर्मो द्वारा ही प्राप्त होती है। इस लिये इस जीवन को व्यर्थ न गवायें। मनुष्य जीवन के चार भाग ––विद्यार्थी जीवन, गृहस्थ जीवन, वानप्रस्थ जीवन और सन्यास– मोक्ष प्राप्त करने का रास्ता है, बर्शितिया व्यक्ति इन चारों भागों को वेदों में बतायें ढंग से जीयें।

इन सभी आश्रमों में गृहस्थ आश्रम मनुष्य के समुख सब से अधिक चुनोतिया पेश करता है। कारण मनुष्य के जो पांच शत्रु हैं–––––काम, कोध, लोभ, मोह व अंहकार, ये हर पल उसे दबोचने की कोशिश करते हैं। चाहे धन का अर्जित करना हो या फिर घर के सदस्यों के प्रति कर्तव्य। अक्सर देखा गया है, ग्रहस्थ में रहते हुये, मनुष्य मोह माया के जाल में फंसता ही जाता है। इसी लिये इस आश्रम को चुनौतीपूर्ण कहा गया है। मनुष्य को हर पल परिक्षा से गुजरना होता है। यदि परिक्षा मे सफलता से गुजर जाता है तो वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है, अन्यथा जन्म मरण के चक्र में पढ़ा रहता है।

प्रश्न उठता है कि मनुष्य कैसे चुनौतियों का सफलतापूर्ण सामना करे? प्रत्येक गृहस्थी को तीन एषणाओं से छूटने का अभ्यास हर समय करते रहना चाहिये। यह है पुत्रैषणा, वितैषणा और तीसरी है लौकेषणा।

पुत्रैषणा–––इसका सीधा अर्थ है कि पत्नि, पुत्र–पुत्री आदि के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुये उनसे कोई अपेक्षा न रखें। अगर आप के दिये संस्कार ठीक होंगे तो वे अपने कर्तव्य को समझेंगे। मोह माया दुख दायी है, इस लिये मोह से अपने आप को बचायें।

वितैषणा–––धर्मपूर्वक अपने परिश्रम से कमायें धन पर अपनी , परिवार की ठीक आवश्यकताओं की पूर्ती करते हुये समाज और देश के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करना। लोभ से वशिभूत अधर्म और पाप द्वारा धन कमाने से बचना। एक तरफ जहां धन

की पवित्रता पर ध्यान देना आवश्यक है, वहीं दूसरी और यह भी आवश्यक है कि हम आयु के साथ अपनी भौतिक आवश्यकताओं को भी कम करते जायें, और यदि धन आवश्यकता से अधिक है तो अपने से कमजोर प्राणियों की सहायता करें।

लोकैषणा——अत्याधिक मान सम्मान की ईच्छा रखना लोकैषणा कहलाती है। इसके पीछे भागना व्यक्ति को अपने ठीक रास्ते से अलग कर देती है। मान अपमान में सम रहना ही अच्छे मनुष्यों का गुण होता है। यदि कोई श्रद्धापूर्वक आपको सम्मान देता है तो उसे स्वीकार करें, पर इसकी ईच्छा न करें।

इस प्रकार यदि मनुष्य अपने गृहस्थ जीवन में पुत्रैषणा, वितैषणा और लौकेषणा के उपर विजय पाने में समर्थ है तो उसका सन्यास और वानप्रस्थ का रास्ता आसान हो जाता है, वरना गृहस्थ जीवन में लोभ– मोह वश अपने द्वारा पैदा की सम्स्याऐं उस के सन्यास और वानप्रस्थ को भी खत्म कर देती है।

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। **Book is in English**

से जुड़ी है। **Stories are on various aspects of human life.**

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डबार, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL & All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines

Booth No. 65, Sector 20-D, Chandigarh

DEPRESSION/TENSION
A SELF ACQUIRED AILMENT

T.R.Goyal

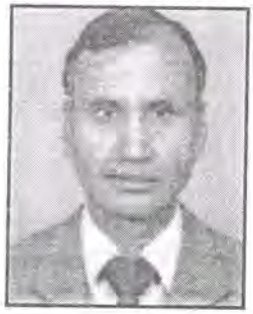

For the last over 20 years, it has been seen that like heart attack, cancer, diabetes, kidney failure etc, the disease of stress/tension has been spreading at an alarming pace. Depression is nothing but a mental disorder and self imposed ailment by the well to do people for no genuine reason. The more a highly placed and affluent person is, the more he suffers from such problems. I think genuine reason for falling a victim to the tension, are very few. First, may be the extreme poverty for which the poor is not sure how to make ends meet. Second, is the chronic disease or permanent disability that compels a person to think that he is a liability for the family. Third, is the poor who is exploited, cheated and deprived of his due rights and denied justice in the society. Other causes of being afflicted with tension are unfounded and baseless sans any logic.

The mad race for name, fame, money and position in the fast changing scenario of electronic and computer boom, has rendered the man insane. Everybody wants to become rich overnight without any hardwork and effort. People suffer from high expectations and desires irrespective of their position and status in public. From the very beginning of school education, parents start dreaming that their ward should top in the class in all disciplines and if he fails to do so, they (parents) go in depression.

Every person desires his son/daughter should be an IAS,IPS,IITian, MBA or doctor despite the fact whether the child is capable of making it to that grade or not. Nobody realizes that when all become IAS,IPS,IITians or MBA, who will run the transport and railways; who will operate thermal plants, power houses, mills, quarries, mines; who will construct roads, bridges, buildings, ports, airports; who will teach in schools and colleges to produce IAS and IPS; who will operate health services; who will join ordinary cadet in army and police; who will perform slew of other jobs like plumbing, carpentry, smithy, masonry, trading and farming etc.

In daily life, we listen to the sermons of Ramayana, Mahabharata, and Gita but do not follow the teachings and ideals enshrined therein. When Lord Rama was informed about his coronation, he was not overjoyed and when instead of coronation, asked to go to the jungle in exile for 14 years, there was no sign of remorse on his face. Similarly in Bhagvad Gita, Lord Krishna taught that a man should do his duty honestly without longing for the fruits which is in the hands of God. We often hear, children of orphanages singing " Hame toone Malik sab kuch diya hai, tera shukriya hai, tera shukriya hai". On the other hand, millionaires are heard cursing God that they have been denied justice. It is a pity that such persons have polluted and malicious thinking and then how do they deserve any sympathy from society. One of the most cardinal Vedic teaching is "Manur Bhav" be a good human before anything else. Today everybody wishes that his ward should be a big package holder and nothing else. Under such situation with such a mindset how one can hope for mental peace and tranquility which are essential Ingredients to ward off depression and tension.

House no 6026, (duplex)
Modern Housing Complex
Manimajra, UT Chandigarh
Mobile - 8559089144

सम्पादकीय

जनता आपका काम देखती है। केवल बड़ी बड़ी बातें और वायदे करने से ही काम नहीं चलता

बांग्लादेश के आम चुनावों में प्रधानमन्त्री शेख हसीना की आवामी लीग ने न केवल तीसरी बार जीत दर्ज की, बल्कि उसने 299 सीटों में से 288 सीटे जीत कर विपक्ष का सफाया कर दिया। सब से खास बात यह थी कि अंतराष्टीय परिवेषकों ने चुनाव को सवतन्त्र व निरपक्ष बताया।

हसीना को मिली इस ऐतिहासिक जीत के पीछे, उसने पिछले दस सालों के शासन के दौरान जो सामाजिक और आर्थिक मोर्चो पर कामयाबी हासिल की है, उसका सीधा असर है। कोई समय था जब बांग्लादेश भारत के सब से गरीब प्रांत उड़ीसा से भी गरीब था, परत्तु पिछले 15 वर्ष में उस का नक्शा ही बदल गया है। आज वह मानविय उन्नती के कई मापदण्डों में भारत से आगे निकल गया है, जिस में स्त्री सशक्तीकरण भी आता है। किसी समय बांग्लादेश दुनिया के सब से गरीब देशों में था परन्तु आकड़े बताते है कि यदि इसी रफतार से बांग्लादेश उन्नती करता रहा तो सन 2023 तक वहां कोई गरीब नहीं रहेगां और भारत से उपर आ जायेगा। इसके पीछे दो बड़े कारण है, एक कुशल नेतृत्व और दूसरा चीन द्वारा सहायता।

शेख हसीना कम बोलने वाली एक सुलझी हुई नेता है जो कि बांग्लादेश के हित को सब से उपर रखती है। हालां कि उसे ममता बैनर्जी से काफी अपमानित होना पड़ा फिर भी बांग्लादेश के हित में वह उसे भूल गई और भारत से मित्रता की पहल करती रही। इसी गुण के कारण बांग्लादेश आज विदेशी कमपनियों द्वारा उद्योग स्थापित करने के लिये, भारत से कहीं अधिक पसन्द किया जाता है। विदेशी कम्पनिया भारत की अपेक्षा बांग्लादेश में काम करना पसन्द करती हैं, यही कारण है कि टैक्सटायल के क्षेत्र में , जिस में कि सब से अधिक नौकरियां होती हैं, बांग्लादेश जैसा छोटा देश भारत को पीछे छोड़ गया है।

शेख हसीना की यह सफलता इस बात को दर्शाती है कि आम जनता , यदि काम किया हो तो उसे पहचानती है और उस नेता को फिर से शासन की डोर देती है। परन्तु बोलने की शैली चाहे कितनी भी अच्छी हो परन्तु जो आप बोलते है या वादे करते हैं वे खोखलें निकले तो जनता पुनः आप के खोखले वादों के भ्रम में नहीं पड़ती और गददी से नीचे उतार देती है। जैसा कि भाजपा और खासकर हमारे प्रधानमन्त्री के साथ हो रहा है। पांच साल के शासन के बाद यदि आप कांग्रेस को नीचा और भ्रष्ट बताकर वोट लेना चाहते हैं तो आपका ढंग गलत है, जनता इसे सुनेगी भी नहीं, पांच साल के शासन के बाद तो जनता यह जानना चाहेगी कि आप ने क्या किया।

हालात सामने हैं, ऐसे में बेबुनियाद भविषयवाणी

करना कि भाजपा 360 से उपर और उतर प्रदेश में 75 सीटें आयेंगी, जैसा कि अमित शाह की आदत बन गई है, जनता केवल हंसेगी। सच्चाई यह है कि जैसा मैने 9 महीने पहले अपने लेख में कहा था कि भाजपा 180 सीटों के लिये भी संघर्ष करेगी। क्योंकि अधिकतर काम आम जनता को नुकसान पहुंचाने वाले थे। नरेन्द्र मोदी की गलत नीतियों के कारण तो मध्य प्रदेश की सता भाजपा के हाथ से निकल गई, वरना शिवराज सिंह चौथी बार भी मुख्य मन्त्री बन जाते क्योंकि वह जनता के फायदे के लिये काफी अच्छे काम करते रहें है। भाजपा विरूद्ध लहर के बावजूद ,शिवराज सिंह चौहान द्वारा 108 सीटें ले जाना इस बात को बताता है कि लोग अच्छे काम को पहचानतें है।

मोदी शासन की सब से खराब बात यह रही कि भाजपा जैसी पार्टी जिस में अच्छे नेता काफी होते थे , आज नेतृत्व के मामले में खोखली हो चुकी है। मोदी ने इस कदर अपने से नीचे वाले नेताओं को दबा कर रखा कि आज किसी में यह साहस नहीं कि मोदी को उस की कमजोरियां बता सके। यह

******

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

"लोकसंग्रमेवापि सम्पश्यन् कर्तुमर्हसि।"

तुम्हें लोक कल्याण के लिये संग्रह करना चाहिये, तुम यदि पूर्णकाम हो गये हो तो भी तुम्हें निष्काम भाव से कर्म करना चाहिये अर्थात् तुम्हारा संग्रह लोक कल्याण कें हेतु होना चाहिये। यदि तुम्हारे कर्म इस दिशा में हैं तो कर्म तुम्हारे लिये बन्धन का कारण नहीं बन सकते। ऋषियों के जीवन जीने की यही कला थी।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

सत्य की हत्या

विनोद स्वरूप

संसार की चकाचौंध, चमक–दमक और भौतिक सुख सुविधाओं में मुग्ध होकर हम भूल जाते हैं कि चमकने वाली प्रत्येक वस्तु सोना नहीं होती। All that glitters is not Gold.

स्वार्थी लोग सत्य को ढ़का ही रहने देना चाहते हैं। लौकिक कीर्ति, यश, पद, प्रतिष्ठा, मान मर्यादा के चक्र में मनुष्य धर्म और सत्य की उपेक्षा करते हुए अनेक झूठ बोलता है, असत्य कार्य करता है।

शराब की फैक्टरी में विभिन्न प्रकार की शराब बनती है और ठेकेदार शराब बेचता है, धन कमाने के लिए। बनाने और बेचने वाले जानते हैं कि इस पदार्थ को पीने वाले के धन, स्वास्थ्य और प्रतिष्ठा को हानि होती है परन्तु फिर भी वह खुलेआम इसे बेचता है। यह भी संभव है कि वह इस की हानियाँ जान कर स्वयं न पीता हो किन्तु धन के लोभ में इसे बेचता है।

दीपावली के आस–पास पटाखे खूब बिकते हैं। इन्हें बनाने व बेचने वाले भली–भान्ति जानते हैं कि पटाखे फोड़ना वातावरण के लिए हानिकारक है। इन से वायु प्रदूषण के साथ–साथ दुर्घटना होने का भय भी रहता है। किन्तु फिर भी वे इन्हें बनाते और बेचते हैं। क्योंकि धन कमाना इनका एकमात्र उद्देष्य है।

पौराणिक पण्डित मन्त्र बोल कर मूर्ति में प्राण–प्रतिष्ठा करते हैं। वे भली–भान्ति जानते हैं कि मन्त्र बोलने से इस में प्राणों का संचार नहीं हो सकता क्योंकि प्राण–प्रतिष्ठा के बाद भी न मूर्ति बोलती हैं, न चलती–फिरती, न रोती हँसती है फिर भी वे मूर्ति पूजा को ईश्वर की पूजा कह कर धन सम्पति एकत्रित करते हैं क्योंकि इस में उन का प्रयोजन और स्वार्थ छिपा है।

एक बार पौराणिक शास्त्रार्थ माध्वाचार्या जी एक धार्मिक सभा में प्रवचन कर रहे थे। वे अपने प्रवचन में मूर्ति पूजा का समर्थन कर रहे थे और महर्षि दयानन्द के विरूद्ध बोल रहे थे। उनके प्रवचन के उपरान्त एक विद्वान ने उनके कमरे में जा कर पूछा कि आप मूर्ति–पूजा के पक्ष में और महर्षि के विरूद्ध क्यों बोलते हैं ? माध्वाचार्या ने उत्तर दिया–मैं महर्षि दयानन्द के विरूद्ध जितना अधिक बोलता हूँ, मेरे भक्त मुझे उतनी ही अधिक दक्षिणा देते हैं। इसे कहते हैं 'सत्य सोने के ढ़क्कन से ढ़का है।' स्वार्थी लोग इसे ढ़का ही रखना चाहते हैं क्योंकि इस में उन का निजी प्रयोजन होता है।

आओ, अब वर्तमान राजनीति पर भी दृष्टिपात कर लें। राजनीति में पद, प्रतिष्ठा, धन और सुविधा की आपार संभावनाऐं हैं। वोट के भिखारी कभी सत्य के पूजारी नहीं हो सकते। राजनेता पाखण्डी और भ्रष्ट गुरूओं की शरण में जाकर उनके आगे नतमस्तक होते हैं। अपनी निजी मान्यताओं को परे रखकर ढ़ोंगी गुरूओं के कार्यक्रमों में जाकर उनके कार्यों की प्रशंसा इसलिए करते हैं ताकि उनसे वोटों का प्रसाद मिल सके। सत्य सिद्धान्तों से उन का कुछ लेना–देना नहीं होता।

दुराग्रह अर्थात् हठधर्मिता प्रत्येक युग में होती और इसे चुनौती भी हर युग में दी गई है। गैलिलियो ने जब सिद्ध किया कि पृथ्वी गोल है तो उसे जेल में डाल दिया। ब्रूनो को आग में जला दिया था। इन दोनों शक्तियों के पीछे बाईबल का दुराग्रह था कि धरती चपटी है। सुकरात और दयानन्द को विष देकर मारा गया क्योंकि इनके समयों की राजशक्ति और समाजशक्ति का असत्य के साथ दुराग्रह रहा। अनेक बलिदानी सत्याग्रही दुराग्रह की भेंट चढ़े थे।

मृत्यु तो अमृत है, अगर मन यहसमझे

महेष विद्यालंकार

मृत्यु को अमृत कहा गया है, परन्तु साधारण विवेक वाला व्यक्ति इस कथन पर हैरान ही होगा। अगर सचमुच मत्यु अमृत हो तो परमात्मा का विलक्षण चमतकारी परिवर्तन है। यदि मृत्यु न होती तो धरती नरक बन जाती और यह दुनिया रहने लायक नहीं रहती। मृत्यु ने जीवन को सार्थक बना दिया है। कलपना करो यदि मृत्यु न होती तो यह संसार या हमारे परिवार कैसे होते। बुढ़े, रोगी और असहाय व्यक्तियों की भरमार होती। मनुष्य जीवन से तंग, दुखी और परेशान हो जाता और जीवन नीरस और व्यर्थ लगता। संसार का संतुलन बिगड़ जाता, शायद खाने को अनाज न होता और सांस लेने के लिये हवा और पीने के लिये जल न मिलता।

यदि मरने का भय और अच्छे कर्मो द्वारा अगले जन्म में मानव चोले की इच्छा न हो तो मानव धर्म , कर्म, सत्संग, साधना, भक्ति, मन्दिर, तीर्थ आदि सब को भूल जाता। मनुष्य बहुत अहंकारी और अत्याचारी हो जाता, संसार के नियम, व्यवस्था, अनुशासन आदि सब फेल हो जाते। परमात्मा द्वारा बुरे कर्म के बुरे फल के भय की कोई आवश्यकता न रहती। जीवन और जगत दोनो बोझ बन जाते। सच पूछो तो मृत्यु ने जीवन का मूल्य बना दिया है। मृत्यु के बिना जीवन का मूल्य कुछ नही रहता। इसीलिये मृत्यु को अमृत कहा गया हैं। मृत्यु सच्ची मित्र है। हमें सदा नई आशाऐं एवं अवसर प्रदान करती हैं। मृत्यु जरा जीर्ण, पुराना, बूढ़ा, व्याधीग्रसत, कटा– फटा, सला गड़ा शरीर लेकर, शिशु के रूप में सुन्दर, आकर्षक, भोलाभाला और नया शरीर दे देती है, जिसे सभी देखना, चूमना,उठाना और मिलना चाहते है। इतना बड़ा परिवर्तन संसार की और कोई शक्ति नहीं करती। ज्ञानी व्यकित के लिये मृत्यु सुखद और अज्ञानी के लिये दुखद होती है।

जो मृत्यु के सत्यस्वरूप को समझ लेते हैं वे कभी मृत्यु से चिन्तित और भयभीत नहीं होते।

महामृत्जय मन्त्र इसी भाव को लेकर ईश्वर से प्रार्थना है कि हे प्रभु जब मेरे जीवन की यात्रा इस लोक में पूर्ण हो जाये तो मुझे वैसे ही इस देय से छुटकारा मिल जाये जैसे कि पक्का हुआ खरबूजा स्वयं ही बेल से अलग हो जाता है।

मृत्यु से दुखद तथा भयभीत हम इस लिये होते है क्योंकि हम केवल भौतिक शरीर को ही सब कुछ समझते हैं, जो कि नश्वर है। वास्तव में हम आत्मा हैं। शरीर तो हमारा साधन है। जब पुराना वस्त्र घिस जाता और फटने लगता है तब हम उसे बदल देते हैं। ऐसे ही जब पुराना शरीर साथ नहीं देता, तब आत्मा उसे बदल लेती है। यही मृत्यु है।

"लोकसंग्रमेवापि समपश्यन् कर्तुमर्हसि।"

तुम्हें लोक कल्याण के लिये संग्रह करना चाहिये, तुम यदि पूर्णकाम हो गये हो तो भी तुम्हें निष्काम भाव से कर्म करना चाहिये अर्थात् तुम्हारा संग्रह लोक कल्याण कें हेतु होना चाहिये। यदि तुम्हारे कर्म इस दिशा में हैं तो कर्म तुम्हारे लिये बन्धन का कारण नहीं बन सकते। ऋषियों के जीवन जीने की यही कला थी।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mr. Arya Mahila sangthan distributed socks to slum children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

श्री सुरिन्द्र मोहन सूद

श्री धर्मवीर कनोत्र

श्री सुरेन्द्र कम्बोज

श्री मोहन लाल गुप्ता

श्रीमती संतोष अग्रवाल

श्रीमती कृष्णा चौधरी

श्रीमती एवं श्री अलोक गुप्ता

RNI NO. CHABIL/2012/47744

मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in